टिप्पणी

201hi08

8

चंद्रगहना से लौटती बेर

आपने गाँव की खूबसूरती को देखा है। खुले-खुले खेत, झूमती फसलें, लहराते तालाब, चमकती चाँदनी, चहकते पक्षी और प्रकृति के अनेक सुंदर दृश्य हमारे मन में हलचल मचाते हैं। इन्हें देखकर बड़ा आनंद आता है। देखने के बाद सामान्य व्यक्ति उन्हें भूल भी जाते है, किंतु कवि का देखना औरों के देखने से अलग होता है। कवि किसी भी दृश्य का सूक्ष्म अवलोकन करता है, वह उन दृश्यों को अपने शब्दों में पिरो लेता है और ऐसा आकर्षक बना देता है कि पाठक या श्रोता आनंदित हो उठते हैं। हमने और आपने भी खेतों में कई प्रकार की फसलें देखी हैं, गाँव के पोखर भी देखे हैं, वसंत का आनंद भी लिया है, लेकिन कवि ने जिस ढंग से इन दृश्यों को उतारा है, वह बिल्कुल निराला है– ऐसा निराला कि कविता पढ़ते समय वे दृश्य हमारी आँखों के सामने सजीव हो उठते हैं, हमें आनंदित कर देते हैं। कवि ने कैसे उभारा है इन दृश्यों को, आइए पढ़ते हैं कविता– चंद्रगहना से लौटती बेर।

उद्देश्य

इस पाठ को पढ़ने के बाद आप–

- गाँव के प्राकृतिक दृश्यों के बारे में बता सकेंगे;
- ग्रामीण परिवेश में ब्याह-शादी के दृश्य पर टिप्पणी कर सकेंगे;
- प्रकृति-चित्रण के माध्यम से समाज के भिन्न-भिन्न व्यवहारों का उल्लेख कर सकेंगे;
- तालाब के दृश्य और उसमें घटित होने वाली घटनाओं का वर्णन कर सकेंगे;
- महत्त्वपूर्ण स्थलों की व्याख्या कर सकेंगे;
- कविता का भाषा-सौंदर्य स्पष्ट कर सकेंगे।

टिप्पणी

8.1 मूल पाठ

चंद्रगहना से लौटती बेर

देख आया चंद्रगहना
देखता हूँ दृश्य अब मैं
मेंड़ पर इस खेत की बैठा अकेला।
एक बीते के बराबर
यह हरा ठिगना चना,
बाँधे मुरैठा शीश पर
छोटे गुलाबी फूल का,
सज कर खड़ा है।
पास ही मिल कर उगी है
बीच में अलसी हठीली
देह की पतली, कमर की है लचीली,
नील फूले फूल को सिर पर चढ़ाकर
कह रही है जो छुए यह
दूँ हृदय का दान उसको।
और सरसों की न पूछो–
हो गई सबसे सयानी,
हाथ पीले कर लिए हैं,
ब्याह-मंडप में पधारी;
फाग गाता मास फागुन
आ गया है आज जैसे।
देखता हूँ मैं : स्वयंवर हो रहा है
प्रकृति का अनुराग अंचल हिल रहा है
इस विजन में
दूर व्यापारिक नगर से
प्रेम की प्रिय भूमि उपजाऊ अधिक है।

और पैरों के तले है एक पोखर,
उठ रहीं इसमें लहरियाँ,
नील तल में तो उगी है घास भूरी,
ले रही वह भी लहरियाँ।
एक चाँदी का बड़ा-सा गोल खंभा
आँख को है चकमकाता।
हैं कई पत्थर किनारे
पी रहे चुपचाप पानी
प्यास जाने कब बुझेगी!

चंद्रगहना – गाँव का नाम
बीते के बराबर – छोटा-सा (बालिश्त भर)
ठिगना – छोटा, नाटा
मुरैठा – पगड़ी
अलसी – एक तिलहन का पौधा
हठीली – ज़िद्दी
सयानी होना –(i) समझदार होना (ii) युवती होना (iii) चतुर होना
हाथ पीले होना – विवाह होना
फाग – होली के मौसम में गाया जाने वाला लोकगीत
स्वयंवर – विवाह की वह प्रथा जिसमें युवती स्वयं अपना वर चुनती है
अनुराग – स्नेह, प्रेम
अंचल – आँचल
विजन – निर्जन
पोखर – छोटा तालाब
लहरियाँ – पानी में उठने वाली छोटी-छोटी लहरें
नील तल – नीले रंग की सतह
चाँदी का बड़ा-सा गोल खंभा – पानी में चंद्रमा की परछाई या प्रतिबिंब
चकमकाता – चौंधियाता, चकाचौंध पैदा करता
श्वेत – सफ़ेद, उजला
चटुल – चतुर, चालाक
गगन – आकाश, आसमान

चुप खड़ा बगुला डुबाए टाँग जल में,
देखते ही मीन चंचल—
ध्यान निद्रा त्यागता है,
चट दबा कर चोंच में
नीचे गले के डालता है।
एक काले माथ वाली चतुर चिड़िया
श्वेत पंखों के झपाटे मार फ़ौरन
टूट पड़ती है भरे जल के हृदय पर,
एक उजली चटुल मछली
चोंच पीली में दबाकर
दूर उड़ती है गगन में।

— **केदारनाथ अग्रवाल**

मीन – मछली
ध्यान निद्रा–ध्यान रूपी निद्रा, ध्यान में डूबा हुआ-सा
चट – तुरंत
झपाटे मारना – झपटना

8.2 आइए, समझें

8.2.1 अंश–1

कविता पढ़ते हुए यह आप जान गए होंगे कि इसमें प्रकृति का सुंदर चित्रण किया गया है। कवि चंद्रगहना नामक किसी स्थान से लौटा है। लौटते हुए निर्जन खेतों में उसने प्रकृति के मोहक सौंदर्य के अनेक दृश्य देखे हैं और उन्हें अपनी कविता में चित्रित किया है। आइए, इसे ठीक से समझने के लिए इस कविता की प्रारंभ की 25 पंक्तियाँ एक बार फिर से पढ़ लें।

देख आया चंद्रगहना
देखता हूँ दृश्य अब मैं
मेंड़ पर इस खेत की बैठा अकेला।
एक बीते के बराबर
यह हरा ठिगना चना,
बाँधे मुरैठा शीश पर
छोटे गुलाबी फूल का,
सज कर खड़ा है।
पास ही मिल कर उगी है
बीच में अलसी हठीली
देह की पतली, कमर की है लचीली,
नील फूले फूल को सिर पर चढ़ाकर
कह रही है जो छुए यह
दूँ हृदय का दान उसको।
और सरसों की न पूछो–
हो गई सबसे सयानी,
हाथ पीले कर लिए हैं,
ब्याह-मंडप में पधारी;
फाग गाता मास फागुन
आ गया है आज जैसे।
देखता हूँ मैं : स्वयंवर हो रहा है
प्रकृति का अनुराग अंचल हिल रहा है
इस विजन में
दूर व्यापारिक नगर से
प्रेम की प्रिय भूमि उपजाऊ अधिक है।

कविता के प्रारंभ में पहली ही पंक्ति में कवि मानो सूचना दे रहा है–'मैं चंद्रगहना देख आया।' लौटते हुए खेत की मेंड़ पर अकेला बैठा हुआ वह खेत और उसके आस-पास के दृश्यों को देख रहा है। सबसे पहले उसका ध्यान खेत में उगे हुए चने की ओर जाता है। चने के पौधे का आकार छोटा होता है। चने में गुलाबी रंग के फूल आ गए हैं। कवि को लगता है, यह छोटे-से कद का, बित्ते भर का चना अपने सिर पर गुलाबी पाग (पगड़ी) बाँधे, सजे-सँवरे दूल्हे-सा खड़ा है।

चना और अलसी दोनों एक ही खेत में पास-पास खड़े हैं। अलसी का पौधा दुबला-पतला और लचीला होता है इसलिए हवा से हिलता-डुलता रहता है। कविता में अलसी के तीन विशेषण दिए हैं— वह हठीली है, वह देह की पतली है और उसकी कमर लचीली है। वह पतली होने के कारण हिलती तो रहती है लेकिन तन कर सीधी भी हो जाती है। तन कर सीधी खड़ी रहती है इसीलिए हठीली भी है। उसके सिर पर कुछ बड़े गोल आकार की डोंड़ियाँ होती हैं, जो फूलती हैं और उन्हीं में बीज बनता है। अलसी का फूल नीले रंग का होता है। अलसी को देखकर कवि को लगता है कि यह दुबली-पतली लड़की है, जो मचलती दिख रही है और मानो कह रही है, 'जो मुझे छू लेगा, मैं उसे

अपना हृदय दे दूँगी। उससे प्यार करने लगूँगी। उसी की हो जाऊँगी'। हठीली होने के बावजूद वह प्यार के लिए लालायित है।

'और सरसों की न पूछो'—किसी के निरालेपन की बात करनी होती है तो हम बात ऐसे ही शुरू करते हैं-'अरे, शोभा की न पूछो। उसकी तो बात ही कुछ और है।' या 'शलभ की बात न पूछो, उस जैसा तो कोई है ही नहीं।' इसी अंदाज़ में कवि कहता है—'और सरसों की न पूछो !' सरसों अब सयानी हो गई है। 'सयानी होना' के तीन अर्थ हैं—एक तो समझदार होना, दूसरा यौवन पा लेना और तीसरा चतुर होना। यहाँ सरसों के विषय में उसे सयानी कह कर कवि ने युवती होने की ओर संकेत किया है और बताया है कि वह विवाह-योग्य हो गई है इसीलिए उसने अपने हाथ पीले कर लिए हैं। हाथ पीले करना' एक मुहावरा है, जिसका अर्थ शादी कर लेना है।

कवि ने सरसों के प्रसंग में ही 'हाथ पीले करना' का प्रयोग क्यों किया? क्योंकि सरसों जब फूलती है तो पूरा खेत ही पीला हो जाता है। तो पीली सरसों ब्याह के मंडप में पधार चुकी है। वहाँ गुलाबी साफा बाँधे चना पहले से ही बैठा है। विवाह की हलचल में फागुन का महीना कैसे चुप रहता? वह 'फाग' गाता हुआ आ पहुँचा है। फाग का गाना, चने का सजना, सरसों का हाथ पीले करना, इन सबमें एक-दूसरे का हो जाने की ललक है।

इस पूरे दृश्य में कवि को लगता है, जैसे स्वयंवर हो रहा है। (किसका ? सरसों का।) जिस प्रकार माँ विवाह-मंडप में कन्या के ऊपर स्नेह भरे आँचल की छाँह करती है, उसी प्रकार यहाँ प्रकृति माँ की भूमिका निभा रही है। प्रकृति का अनुराग भरा आँचल हिल रहा है!

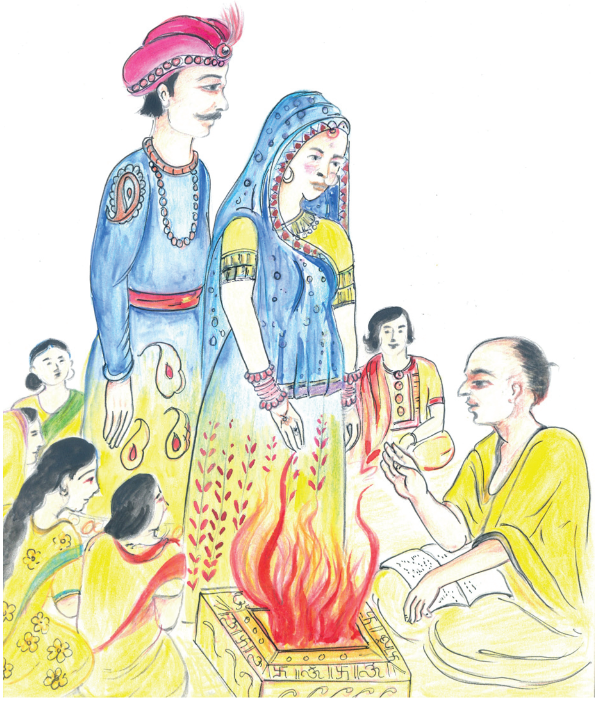

चित्र 8.1

यह दृश्य कवि के मन को छू लेता है। उसे लगता है इस ग्रामीण अंचल में किसी नगर की अपेक्षा अधिक प्यार भरा वातावरण है। नगर तो व्यावसायिक हो गए हैं। व्यावसायिक नगरों में प्यार कम उपजता है। ग्रामीण अंचल की भूमि प्रेम-प्यार के लिए अधिक उपजाऊ है। जैसे कि इस निर्जन अंचल में भी प्रकृति के चप्पे-चप्पे में प्यार दिखाई पड़ रहा है।

क्या आपने एक बात पर ध्यान दिया? अलसी, सरसों आदि वनस्पतियाँ हैं, परंतु कवि ने उन्हें मनुष्यों जैसी क्रियाएँ करते दिखाया है। चना पगड़ी बाँधे खड़ा है। पतली कमर वाली अलसी कह रही है–'मुझे छुओ तो हृदय का दान दे दूँ।' सरसों ब्याह-मंडप में हाथ पीले किए बैठी है। फागुन फाग गा रहा है। जहाँ कवि जड़ प्रकृति या वनस्पति- जगत को चेतन मनुष्य जैसा व्यवहार करते दिखाता है, उसे **मानवीकरण** कहते हैं। मानवीकरण से कविता में सुंदरता आ जाती है। इसे ही **मानवीकरण अलंकार** भी कहते हैं।

यहाँ मानवीकरण के अतिरिक्त एक और सुंदर विधान है। इस पूरे प्रकरण में एक विवाह के मंडप का रूपक है। विवाह के शुभ अवसर पर दूल्हा और उसके परिवार के पुरुष सदस्य गुलाबी पगड़ी बाँधते हैं, लड़कियाँ सज-सँवर कर फूल लेकर अगवानी और छेड़छाड़ करती हैं, कन्या ब्याह-मंडप में लाई जाती है और रात भर लोक गीत गाए जाते हैं।

पाठगत प्रश्न-8.1

सर्वाधिक उपयुक्त विकल्प चुनकर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए :

1. कवि ने चने को गुलाबी मुरैठा बाँधे बैठा हुआ क्यों कहा है?

   (क) चना बहुत प्रसन्न है ☐ (ख) चना विवाह के लिए तैयार है ☐

   (ग) चना पकने को है ☐ (घ) चने को मिलने जाना है ☐

2. हृदय का दान से क्या अभिप्राय है?

   (क) हृदय का इलाज कराना ☐ (ख) प्यार करना ☐

   (ग) भला चाहना ☐ (घ) इज्जत देना ☐

3. 'फाग गाता मास फागुन आ गया है' पंक्ति में कौन-सा अलंकार है।

   (क) यमक ☐ (ख) उपमा ☐

   (ग) मानवीकरण ☐ (घ) रूपक ☐

4. 'प्रेम की प्रिय भूमि उपजाऊ अधिक है'–किसके लिए कहा गया है?

   (क) सरसों के लिए ☐ (ख) व्यापारिक भूमि के लिए ☐

   (ग) ग्रामीण परिवेश के लिए ☐ (घ) अलसी के लिए ☐

टिप्पणी

क्रियाकलाप-8.1

मानवीकरण क्या है– यह आप समझ ही चुके हैं। विभिन्न ऋतुओं के आने पर प्रकृति में परिवर्तन होता है। नीचे ऐसी ही कुछ स्थितियाँ दी गई हैं। उनका मानवीकरण कीजिए।

	स्थिति	मानवीकरण
(क)	वसंत ऋतु में पेड़ में नए पत्ते आना	....
(ख)	सावन में मेघों का गर्जना	....
(ग)	सर्दी में कोहरा पड़ना	....
(घ)	गर्मियों में लू चलना	....

8.2.2 अंश - 2

आइए, पहले कविता की शेष पंक्तियों को एक बार फिर से पढ़ लेते हैं। इन पंक्तियों में पाँच दृश्य हैं, जो क्रमशः इस प्रकार हैं :

1. तालाब में लहरियाँ लेती भूरी घास।
2. चाँदी का बड़ा-सा गोल खंभा (चाँद का प्रतिबिम्ब)।
3. किनारे पर पड़े पत्थर
4. मछली की टोह में ध्यानमग्न बगुला।
5. मछली पर झपटती काले माथे वाली चिड़िया।

कवि को नीचे एक तालाब दिखाई पड़ता है जिसमें छोटी-छोटी लहरें (लहरियाँ) उठ रही हैं। पोखर का तल नीला है पर उसमें भूरे रंग की कुछ घास भी उगी है और तालाब की लहरों में वह भी डोल रही है।

साँझ होने को आई है और तालाब की सतह पर चाँद का प्रतिबिंब चमक रहा है। उसकी चमक आँखों को चौंधिया देती है। चाँद के बारे में कवि की कल्पना देखिए–'एक चाँदी का बड़ा-सा गोल खंभा'। चाँद के लिए चाँदी का बड़ा-सा, गोल खंभा कहना ठीक है, परंतु क्या आप बता सकते हैं कि चाँद कवि को खंभा क्यों प्रतीत हुआ? जी, हाँ ! किसी तालाब या पोखर के हिलते जल में चाँद का प्रतिबिंब उसकी गहराई का भी बोध कराता है जबकि शांत जल में वह एक गोला-सा ही लगता। लहरों वाले तालाब में किरणों के फिसलने से उसमें लंबाई प्रतीत होती है। इसलिए कवि को लगता है–'चाँदी का बड़ा-सा गोल खंभा।' –इसे ही कहते हैं कवि की सूक्ष्म दृष्टि और कल्पना।

और पैरों के तले है एक पोखर,
उठ रहीं इसमें लहरियाँ,
नील तल में तो उगी है घास भूरी,
ले रहीं वह भी लहरियाँ।
एक चाँदी का बड़ा-सा गोल खंभा
आँख को है चकमकाता।
हैं कई पत्थर किनारे
पी रहे चुपचाप पानी
प्यास जाने कब बुझेगी !
चुप खड़ा बगुला डुबाए टाँग जल में,
देखते ही मीन चंचल–
ध्यान निद्रा त्यागता है,
चट दबा कर चोंच में
नीचे गले के डालता है।
एक काले माथ वाली चतुर चिड़िया
श्वेत पंखों के झपाटे मार फ़ौरन
टूट पड़ती है भरे जल के हृदय पर,
एक उजली चटुल मछली
चोंच पीली में दबाकर
दूर उड़ती है गगन में।

चित्र 8.2

आइए अब देखें कि इस कविता की अगली तीन पंक्तियों में कवि क्या कहना चाहता है। क्या आप कभी तालाब के किनारे घूमने गए हैं? आपने ध्यान दिया होगा—तालाब के किनारे अनेक पत्थर भी होते हैं। कवि का ध्यान भी उन पत्थरों की ओर जाता है। कवि कल्पना करता है कि वे पत्थर तालाब के किनारे पड़े चुपचाप उसका पानी पी रहे हैं। कब से? वर्षों से, शायद जब से तालाब बना, तब से। कवि यहाँ पर तालाब और उसमें स्थित पत्थरों के प्राचीन साहचर्य को व्यक्त करता है। तालाब के पानी में रहने वाली अन्य वस्तुएँ गतिशील हैं, लेकिन पत्थर बिना हिले-डुले उसमें चुपचाप पड़े हुए हैं। इन्हें देखकर कवि कल्पना करता है कि ये पत्थर पता नहीं कितने समय से चुपचाप तालाब का पानी पी रहे हैं। पानी में डूबे पत्थरों में कवि को झुककर पानी पीते प्राणियों की याद आ रही होगी इसलिए यहाँ पर उसने पत्थरों का सुंदर मानवीकरण किया है। ये पत्थर निरंतर पानी पीने की मुद्रा में ही रहते हैं, इसलिए कवि विस्मय प्रकट करता है कि पता नहीं इनकी प्यास कब बुझेगी।

कविता की आगे की पंक्तियों में तालाब के कुछ और दृश्य भी कवि का ध्यान खींचते हैं। जैसे— एक बगुला, जो पानी में टाँगें डुबाए, ध्यानमग्न सोया हुआ-सा खड़ा है। वह सचेत तो है, परंतु देखने वाले को ऐसे लगता है जैसे सो रहा है। पर ज्यों ही उसे कोई चंचल मछली दिखाई पड़ती है वह उसे तत्काल लपक कर गटक लेता है।

एक काले माथे वाली चालाक चिड़िया भी अपने सफ़ेद पंख फैला कर तालाब की सतह पर झपट कर पानी के भीतर से एक उजली सफ़ेद मछली को अपनी पीली चोंच में दबाकर आकाश में उड़ जाती है।

कविता के पहले भाग के दृश्यों से अंतिम भाग के दृश्यों की तुलना कीजिए। आप क्या अंतर पाते हैं? पहले भाग में प्रकृति का लुभावना रूप था, पर यहाँ उसके कुछ कठोर किंतु वास्तविक रूप हैं।

प्रकृति की वास्तविकता और कठोरता का एक रूप आपने पढ़ा जो कविता में स्पष्ट रूप से उपस्थित है। किंतु क्या आप इस तथ्य से परिचित हैं कि अच्छी कविता वह मानी जाती है, जिसके कई आयाम हों, जो कई अर्थों को खोलती हो? आइए, इस कविता का एक दूसरा पक्ष भी समझ लेते हैं।

बगुला समाज के ढोंगी लोगों का प्रतीक है, जो दिखावा कुछ करते हैं और उनका आचरण कुछ और ही होता है। इसलिए कहावत भी है– बगुला भगत ! कविता में भी ढोंगी बगुला ध्यान लगाकर खड़ा है, किंतु मछली को देखते ही उसे झट पकड़ कर, चट गटक जाता है। चिड़िया के 'चतुर' विशेषण पर गौर कीजिए, यह कुछ चालाक लोगों की ओर संकेत करती है। चालाक चिड़िया, मछली को झपट कर उठा लेती है। प्रकृति के ये दृश्य भी समाज के व्यवहार की ओर संकेत करते हैं। समाज में कुछ कपटी, चालाक और धूर्त लोग दूसरों का शोषण करते हैं, किंतु इनकी अधिकता नहीं है। विशेष बात तो यह है कि प्रकृति का प्यार भरा रूप अधिक आकर्षक है।

पूरी कविता में दो दृश्य दिखाई दे रहे हैं– पहला दृश्य खेत का है, जिसमें चना, अलसी, सरसों सब प्रेम से ओत-प्रोत हैं। दूसरा दृश्य पोखर का है, जिसमें बगुला, चिड़िया, पत्थर आदि हैं। ये सब क्रमशः शोषक, चालाक और हृदयहीन व्यक्तियों के प्रतीक हैं। कविता से साफ़ ज़ाहिर है कि ग्राम की पृष्ठभूमि प्यार से उर्वर है, वहाँ एक दूसरे का हो जाने की तमन्ना है, परस्पर प्रेम है, स्नेह है, सौहार्द है।

लेकिन, दूसरे दृश्य में उन बगुला भक्तों का ज़िक्र है, जो अवसर मिलते ही दूसरों की जान तक ले लेते हैं। वे शोषक हैं और संवेदनशून्य।

पाठगत प्रश्न-8.2

सर्वाधिक उपयुक्त विकल्प चुनकर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए :

1. तालाब के तल में भूरी घास लहरियाँ क्यों लेती है? क्योंकि:–

   (क) तालाब का पानी हिलता है। ☐ (ख) तालाब के नीचे हवा है। ☐

   (ग) घास घुँघराली है। ☐ (घ) मछलियाँ घास को हिला देती हैं। ☐

2. चाँद गोल खंभा-सा क्यों लग रहा है?

   (क) पानी के हिलने के कारण ☐ (ख) पानी के ठहरे होने के कारण ☐

   (ग) मछलियों के चलने के कारण ☐ (घ) बगुलों के भय के कारण ☐

3. बगुला किसका प्रतीक है?

   (क) शोषित का ☐ (ख) मजदूर का ☐

   (ग) भूखे व्यक्ति का ☐ (घ) शोषक का ☐

4. काले माथे वाली चिड़िया प्रतीक है—

(क) सादे लोगों की ☐ (ख) चालाक लोगों की ☐

(ग) पठित वर्ग की ☐ (घ) श्रमिक वर्ग की ☐

क्रियाकलाप-8.2

'प्रकृति की व्यापारिक नगर से' पंक्ति में आपने 'व्यापारिक' शब्द पढ़ा है; इसे समझने के लिए निम्नलिखित शब्दों को देखिए :

मास + इक = **मा**सिक

वर्ष + इक = **वा**र्षिक

धर्म + इक = **धा**र्मिक

इतिहास + इक = **ऐ**तिहासिक

मूल + इक = **मौ**लिक

'इक' प्रत्यय लगने पर मूल शब्द में परिवर्तन के नियम निम्नलिखित हैं—

पूर्वस्वर में वृद्धि तथा अंतिम स्वर का लोप हो जाता है।

शब्द के पहले अक्षर के साथ बोले जाने वाले स्वर में वृद्धि हो जाती है, जैसे

- 'अ' का 'आ' हो जाएगा मास + इक = (मासिक)
- इ, ई, ए का ऐ हो जाएगा इतिहास + इक = (ऐतिहासिक)
- उ, ऊ, ओ का औ हो जाएगा मूल + इक = (मौलिक)

सामासिक शब्द में चूँकि दो शब्द होते है, अतः दोनों ही शब्दों के पहले अक्षर के स्वर में वृद्धि होगी।

पूर्वस्वर में वृद्धि तथा अंतिम स्वर के लोप का नियम ऊपर दिए अनुसार ही होगा तथा 'इक' प्रत्यय अंत में जुड़ेगा।

जैसे— परलोक का पारलौकिक बनेगा।

पर + लोक

पार + लौक

नीचे दिए गए शब्दों में 'इक' प्रत्यय जोड़कर लिखिए:

दिन, सप्ताह, पक्ष, मर्म, देह, निसर्ग, सर्वभूमि, इहलोक, इन्द्रजाल, अधिभूत

8.3 भाव-सौंदर्य

कविता पढ़कर आप यह तो जान ही गए कि यह कविता प्रकृति-सौंदर्य तथा ग्रामीण परिवेश के मोहक वातावरण को चित्रित करती है। इस वातावरण ने कवि को इतना

आकर्षित किया कि खेत के मेंड पर बैठे-बैठे उसने यह कविता रच डाली। देखे हुए प्राकृतिक सौंदर्य को पाठक तक पहुँचाने के लिए कवि ने एक सुंदर कल्पना की है। उसने विवाह के उत्सव का आरोप प्रकृति पर किया है। जिस प्रकार विवाह या किसी अन्य उत्सव के अवसर पर मनुष्य समाज में हलचल बढ़ जाती है, वैसे ही कवि को प्रकृति भी उल्लसित, हलचल से युक्त लगती है।

कवि ने वातावरण की प्रत्येक वस्तु को बड़े ध्यान से देखा है, इसीलिए वह इतने प्रभावशाली ढंग से उसे प्रस्तुत कर पाया है। जिन चीजों को हम देखकर अकसर उनकी उपेक्षा कर देते हैं, कवि ने उनका चित्रण, इस कविता में किया है। पोखर के तल में गतिमान भूरी घास, पोखर के पानी में चाँद के प्रतिबिंब में गोल खंभे की कल्पना, पत्थरों और पानी के लंबे साथ को इस रूप में देखना कि पत्थर झुककर न जाने कब से पानी पी रहे हैं फिर भी उनकी प्यास नहीं बुझती। इन सबके साथ बगुले और चिड़िया की गतिविधियों को कवि ने पाठक के सामने साक्षात कर दिया है।

8.4 भाषा-सौंदर्य

इस कविता के शीर्षक से ही स्पष्ट है कि चंद्रगहना नामक स्थान से लौटते समय कवि ने जो देखा, उसे सरल-सहज शब्दों में कविता के रूप में बाँध दिया है।

आप पढ़ चुके हैं कि इस कविता में स्थान-स्थान पर मानवीकरण है। क्या आप बता सकते हैं कहाँ है? जी हाँ ! चने के पौधे को दूल्हा बनाया गया है। उसके सिर पर मुरैठा बँधा हुआ है। अलसी को हठीली बताया गया है, उसकी कमर को लचीली और देह को पतली बताया गया है। चूँकि उसके फूल नीले निकलते हैं, इसलिए कहा गया है कि **'नील फूले फूल को सिर पर चढ़ा कर'**। कवि ने प्रकृति का कितना सुंदर दृश्य प्रस्तुत किया है–अलसी कहती है कि जो मुझे छुए उसे मैं अपना हृदय दे दूँ। इसी प्रकार सरसों को सयानी लड़की बनाकर प्रस्तुत किया है, जिसके हाथ पीले होने हैं, वह मंडप में ब्याह रचाने के लिए बैठी है। इसी प्रकार के सभी दृश्य मानवीकरण के ही उदाहरण हैं। इसी प्रकार फागुन मास का महीना फाग गाता है या फिर पत्थर कई वर्षों से पानी पी रहे हैं पर फिर भी प्यासे हैं।

इस कविता के कुछ दृश्यों में प्रतीकों की कल्पना भी की जा सकती है। आइए, इसे भी समझें। आप कविता के दूसरे अंश पर फिर से ध्यान दीजिए। उदाहरण के लिए–मछली सामान्य मानव के लिए, बगुले को सफ़ेदपोश व्यक्तियों के लिए या फिर पत्थर दिल इंसान के लिए, जो गरीबों का, आम जनता का शोषण करता रहता है, प्रतीक बनकर प्रयुक्त हुए हैं।

इस कविता को पढ़ते समय आपने इस बात पर भी ध्यान दिया होगा कि बीते के बराबर, ठिगना, मुरैठा, ब्याह, हठीली, लचीली, फाग, अंचल, चकमकाते आदि बोलचाल के सामान्य शब्दों का सुंदर प्रयोग कर कविता सहज बन पड़ी है। साथ ही विवाह का सुंदर दृश्य उपस्थित करने के लिए उसी से जुड़ी शब्दावली के प्रयोग से कविता का सौंदर्य और बढ़ गया है, जैसे–मुरैठा, हाथ पीले करना, ब्याह-मंडप, फाग गाना, स्वयंवर आदि।

टिप्पणी

• कहाँ 'बिंदु' और कहाँ 'चंद्रबिंदु'?

आइए भाषाा के एक प्रमुख रूप 'बिंदु' और उसके समान दूसरे रूप –चंद्र बिंदु' के प्रयोग को समझने की कोशिश करते हैं।

'चंद्रगहना' गाँव में, 'चंद्र' के ऊपर एक बिंदु लगा है। इसे अनुस्वार कहते हैं। यहाँ इसका उच्चारण 'न्' का है। इस कविता में कई शब्द आये हैं, जिनमें 'बिंदु' (अनुस्वार) या 'चंद्रबिंदु' (अनुनासिक) का प्रयोग हुआ है

आइए, अनुनासिकता को समझते हैं। आप जानते हैं कि 'अ, आ, इ, ई, उ, ऊ, ए, ऐ, ओ और औ– ये सभी स्वर मौखिक स्वर हैं यानी इनके उच्चारण में सारी प्राणवायु केवल मुँह से निकलती है। अनुनासिकता स्वरों का ही एक ध्वनिगुण है, इसमें मुँह के साथ-साथ प्राणवायु का कुछ भाग नाक से भी निकलता है। हम सभी स्वरों को अँ आँ इँ, ई, उँ, ऊँ, एँ– इस तरह भी बोल सकते हैं। नियम यह है कि शिरोरेखा के ऊपर यदि मात्रा है, तो केवल बिंदी का प्रयोग करते हैं।

आँख पैरों, (पैरो)
ऊँट मैं, (मैं)
हँस सेंक (सेंक) आदि

अनुस्वार और अनुनासिक में मुख्य अंतर यह है कि अनुस्वार एक व्यजंन है (पंचम व्यंजन– ङ्, ञ् ण् ण् न् म्), किंतु अनुनासिकता स्वर का ही गुण है। इन दोनों के पढ़ने में भी अंतर है। अनुनासिक को स्वर के साथ ही पढ़ा जाएगा, किंतु अनुस्वार का उच्चारण स्वर के बाद स्वतंत्र रूप से होगा।

नीचे दिए गए उदाहरण ध्यानपूर्वक पढ़िए और पाठ से शब्द छाँटकर रिक्त स्थानों को भरिए:

(क) अनुस्वार	(ख) अनुनासिक	
1. चंद्रगहना	1. हूँ	
2. मंडप	2. दूँ	
3. अंचल	3. बाँधे	
4. चंचल	4. लहरियाँ	
5. पंख	5. चाँदी	
6. खंभा	6. आँख	
	7.	7. ....
	8.	8. ....

9.	....	9.	....
10.	....	10.	....

ध्यान दीजिए :

पंख – प ङ् ख	क ख ग घ ङ
चंचल – चञ्चल	च छ ज झ ञ
मंडप – मण्डप	ट ठ ड ढ ण
चंद्र – चन्द्र	त थ द ध न
खंभा – खम्भा	प फ ब भ म

ङ, ञ, ण, न और म पंचम वर्ण हैं। जब भी ये अपने वर्ग के किसी वर्ण से संयुक्त होते हैं, तो उनको अलग से नहीं लिखकर उनके स्थान से पहले वाले अक्षर के ऊपर अनुस्वार के रूप में लिखा जा सकता है। इसे पंचम वर्ण नियम कहते हैं। ऊपर दिए गए शब्दों को फिर से ध्यानपूर्वक देखिए।

पाठगत प्रश्न–8.3

सर्वाधिक उपयुक्त विकल्प चुनकर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए :

1. कविता में सरसों का सयानी होने का संकेत किससे मिलता है?

   (क) हठीली होने से ☐ (ख) ब्याह-मंडप में पधारने से ☐

   (ग) हृदय दान देने से ☐ (घ) पीले फूल आने से ☐

2. नीचे विकल्पों में शब्द तथा उसमें आए पंचम व्यंजन दिए गए हैं। इस दृष्टि से कौन-सा युग्म गलत है—

   (क) कंचन – ञ् ☐ (ख) अनंत – न् ☐

   (ग) पंडित – ण् ☐ (घ) अंजन – ङ् ☐

आपने क्या सीखा

- ग्रामीण परिवेश से जुड़े प्रकृति-चित्रण को कवि ने बहुत सुंदर ढंग से प्रस्तुत किया है।
- चने के खेत की मेंड़ पर बैठे कवि ने हरे चने के गुलाबी फूल को खिले हुए होने के कारण मुरैठा बाँधे और पीली सरसों के फूल खिले होने के कारण उसके हाथ पीले होने और विवाह-मंडप आदि को सुंदर रूप में चित्रित किया है। अलसी को

दुबली-पतली लड़की और हठीली बताया है, क्योंकि वह बीच खेत में होती है। उसके नीले फूल होते हैं, इसलिए *'नील फूले फूल को शीश पर चढ़ाकर'* कवि ने कहा है।

- प्रकृति, माँ के रूप में अपने आँचल की छाया प्रदान कर रही है। इस प्रकार ग्रामीण स्थान पर प्रेम ही प्रेम दृष्टिगोचर हो रहा है।
- फागुन फाग गा रहा है, सरसों सयानी हो गई है, चना मुरैठा बाँधे खड़ा है आदि में मानवीकरण अलंकार है।
- गाँव के तालाब का भी सुंदर चित्रण है। कई वर्षों के प्यासे पानी पीते पत्थर, नीले तल का पोखर, उसमें लहराती हुई घास, मछली, बगुला सभी प्रतीक रूप में प्रयुक्त होकर कविता को नया अर्थ देते हैं।
- सफ़ेद बगुले को ढोंगी बताकर उसके माध्यम से सफ़ेदपोश व्यक्तियों के ऊपर कटाक्ष किया गया है। वह कैसे अपना शिकार पकड़ता है, बतलाया गया है।
- मछली आम आदमी का प्रतीक है, जिसे हर कोई अपना शिकार बनाना चाहता है।

योग्यता विस्तार

कवि-परिचय

केदारनाथ अग्रवाल का जन्म बाँदा जिले के कमासिन गाँव में 1 अप्रैल, 1911 को हुआ था। उनकी कविताओं में श्रमिक, कृषक और संघर्षशील जीवन के अनेक चित्र हैं। अद्‌भुत प्रकृति-चित्रण के लिए भी केदारनाथ अग्रवाल जाने जाते हैं। अनूठा शब्द चयन और चित्रात्मकता इनकी कविता की प्रमुख विशेषताएँ हैं। उन्हें साहित्य अकादमी और सोवियत लैंड नेहरू पुरस्कार से सम्मानित किया गया। श्री अग्रवाल की कुछ प्रमुख पुस्तकें हैं–जमुन जल तुम, फूल नहीं रंग बोलते हैं, आग का आईना, अनहारी हरियाली, कहें केदार खरी-खरी, आत्मगंध, कुहकी कोयल खड़े पेड़ की देह (कविता संग्रह); पतिया (उपन्यास); विचार-बोध, विवेक-विवेचन (निबंध-संग्रह); कवि-मित्रों से दूर (वार्ता)।

'चंद्रगहना से लौटती बेर' कविता 'फूल नहीं, रंग बोलते हैं' संग्रह में है। इस कविता में केदारनाथ अग्रवाल ने शहरी और ग्रामीण परिवेश की जीवन-शैली का तुलनात्मक और प्रतीकात्मक चित्रण किया है।

पाठांत प्रश्न

1. निम्नलिखित पंक्तियों का अर्थ लिखिए :

   (क) बीच में अलसी हठीली
   देह की पतली कमर की है लचीली,

   (ख) फाग गाता मास फागुन
   आ गया है आज जैसे।

   (ग) श्वेत पंखों के झपाटे मार फ़ौरन
   टूट पड़ती है भरे जल के हृदय पर,

2. कविता के आधार पर चने के सौंदर्य का चित्रण कीजिए और बताइए कि उसे किन-किन रूपों में दर्शाया गया है?

3. सरसों को *'हो गई सबसे सयानी'* क्यों कहा गया है? तर्क सहित उत्तर दीजिए।

4. व्यापारिक नगर की अपेक्षा ग्रामीण अंचल को प्रेम के लिए उर्वर क्यों माना गया है?

5. *'एक चाँदी का बड़ा–सा गोल खंभा'* का चित्र अपने शब्दों में स्पष्ट कीजिए।

6. बगुला समाज के किस वर्ग का प्रतीक है और किन विशेषताओं को रेखांकित करता है? क्या आज के समाज में यह उदाहरण प्रासंगिक है?

7. 'चंद्रगहना से लौटती बेर' कविता के माध्यम से कवि ने क्या संदेश दिया है? क्या आप उससे संतुष्ट हैं? उदाहरण सहित उत्तर दीजिए।

8. हृदयहीन पत्थर किन लोगों का प्रतीक है? क्या आज के समाज से ऐसे उदाहरण दे सकते हैं?

9. निम्नलिखित पंक्तियों को ध्यान से पढ़िए और पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए:

   छोटे-से आंगन में
   माँ ने लगाए हैं
   तुलसी के बिरवे दो
   पिता ने उगाया है
   बरगद छतनार
   मैं अपना नन्हा गुलाब
   कहाँ रोप दूँ।

   – केदारनाथ सिंह

   (i) 'तुलसी के बिरवे' और 'छतनार बरगद' के संकेतों को स्पष्ट कीजिए।

(ii) 'मैं अपना नन्हा गुलाब/कहाँ रोप दूँ?' से कवि का क्या आशय है।

(iii) 'गुलाब' किसका प्रतीक है?

उत्तरमाला

पाठगत प्रश्नों के उत्तर

8.1.	1. (ख)	2. (ख)	3. (ग)	4. (ग)
8.2.	1. (क)	2. (क)	3. (घ)	4. (ख)
8.3.	1. (घ)	2. (घ)		